COHERENCE – The Multidisciplinary Research Journal
Volume No: 17, Issue No: 1, Year: 2026 (January-June)
PP: 279-285
ISSN:0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण: भारत में जनता के स्वास्थ्य का आकलन करने और साक्ष्यों के आधार पर निर्णय लेने के लिए एक आवश्यक साधन

Aakanksha Mishra

Guest Lecturer
Department of Home Science, Govt. Danteshwari Mahila Mahavidyalaya
Jagdalpur, Chhattisgarh, India

संक्षेपिका

नेशनल फ़ैमिली हेल्थ सर्वे (NFHS) भारत का सबसे बड़ा और सबसे व्यापक राष्ट्रीय स्तर का घरेलू सर्वेक्षण है, जो देश के सार्वजनिक स्वास्थ्य सूचना तंत्र की नींव का काम करता है। समय-समय पर किए जाने वाले इस सर्वेक्षण से जनसंख्या के आंकड़ों, माँ और बच्चे के स्वास्थ्य, प्रजनन क्षमता, परिवार नियोजन, पोषण, संक्रामक और गैर-संक्रामक रोगों, स्वास्थ्य सेवाओं के उपयोग, स्वच्छता और स्वास्थ्य से जुड़े विभिन्न सामाजिक-आर्थिक कारकों पर विश्वसनीय जानकारी मिलती है। सर्वेक्षण के कई दौरों के दौरान, NFHS केवल जनसंख्या और प्रजनन स्वास्थ्य सर्वेक्षण से बदलकर एक बहुआयामी सार्वजनिक स्वास्थ्य निगरानी प्रणाली बन गया है, जो सबूतों पर आधारित नीति-निर्माण और कार्यक्रमों के मूल्यांकन में मदद करता है। यह पेपर भारत में स्वास्थ्य सेवा योजना बनाने में NFHS के विकास, दायरे, उपयोग और योगदान की समीक्षा करके इसकी ज़रूरत और महत्व की पड़ताल करता है। यह स्वास्थ्य असमानताओं की पहचान करने, राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों की निगरानी करने, संसाधनों के बंटवारे में मार्गदर्शन करने, शैक्षणिक शोध में मदद करने और 'सतत विकास लक्ष्यों' (Sustainable Development Goals) तथा 'यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज' (Universal Health Coverage) की दिशा में भारत की प्रगति का आकलन करने में NFHS की भूमिका पर प्रकाश डालता है। यह पेपर सर्वेक्षण की खूबियों और सीमाओं पर भी चर्चा करता है और डिजिटल तकनीकों तथा नए स्वास्थ्य संकेतकों को शामिल करके इसकी उपयोगिता बढ़ाने के भविष्य के अवसरों की रूपरेखा तैयार करता है। इसमें यह निष्कर्ष निकाला गया है कि NFHS उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य जानकारी का एक ज़रूरी स्रोत बन गया है, जो सही जानकारी के आधार पर निर्णय लेने में सक्षम बनाता है और राष्ट्रीय, राज्य और ज़िला स्तरों पर सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रशासन को मज़बूत करता है। सर्वेक्षण का लगातार विस्तार और आधुनिकीकरण भारत में समान, कुशल और टिकाऊ स्वास्थ्य सेवा योजना का समर्थन करने की इसकी क्षमता को और बढ़ाएगा।

कीवर्ड: नेशनल फ़ैमिली हेल्थ सर्वे, NFHS, सार्वजनिक स्वास्थ्य, सबूतों पर आधारित नीति-निर्माण, स्वास्थ्य निगरानी, स्वास्थ्य सेवा योजना, माँ और बच्चे का स्वास्थ्य, सतत विकास लक्ष्य, भारत।

भूमिका

किसी देश के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए वहाँ की आबादी की सेहत एक बहुत ज़रूरी पैमाना है। एक स्वस्थ आबादी उत्पादकता बढ़ाने, शिक्षा का स्तर सुधारने, आर्थिक विकास और कुल मिलाकर इंसानी विकास में अहम योगदान देती है। हालाँकि, भारत जैसे बड़े और विविधता वाले देश में सबके लिए समान स्वास्थ्य नतीजे पाने के लिए भरोसेमंद, पूरी और सही नुमाइंदगी करने वाला हेल्थ डेटा इकट्ठा करने का एक मज़बूत सिस्टम ज़रूरी है। पॉलिसी बनाने वाले, रिसर्चर और हेल्थकेयर एडमिनिस्ट्रेटर, पब्लिक हेल्थ की प्राथमिकताओं को पहचानने, संसाधनों का सही इस्तेमाल करने, सबूतों पर आधारित नीतियाँ बनाने और हेल्थकेयर उपायों की असरदारता को परखने के लिए सही हेल्थ जानकारी पर निर्भर करते हैं। अच्छी क्वालिटी वाले आबादी-आधारित डेटा के बिना, हेल्थ प्लानिंग

© Copyright @ Authors

ISSN:0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

बिखरी हुई हो सकती है, संसाधनों का गलत बंटवारा हो सकता है, और हेल्थकेयर तक पहुँच और नतीजों में असमानताएँ ठीक से हल नहीं हो पाती हैं।

भारत का हेल्थकेयर का दायरा काफी हद तक डेमोग्राफिक, सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक विविधता वाला है। राज्यों, ज़िलों, शहरी और ग्रामीण इलाकों और अलग-अलग सामाजिक-आर्थिक समूहों के बीच जन्म दर, मृत्यु दर, पोषण का स्तर, माँ और बच्चे की सेहत, बीमारी का प्रसार, साफ़-सफ़ाई, शिक्षा और हेल्थकेयर के इस्तेमाल के मामले में काफ़ी अंतर है। अस्पतालों और हेल्थ सेंटरों से मिलने वाले एडमिनिस्ट्रेटिव हेल्थ रिकॉर्ड अक्सर इन अंतरों को नहीं दिखा पाते हैं क्योंकि उनमें मुख्य रूप से वे लोग शामिल होते हैं जो हेल्थकेयर सेवाओं का इस्तेमाल करते हैं। आबादी का एक बड़ा हिस्सा, खासकर दूर-दराज़ के ग्रामीण इलाकों, आदिवासी समुदायों और आर्थिक रूप से कमज़ोर परिवारों में रहने वाले लोग, आम हेल्थ जानकारी सिस्टम में शायद ही शामिल हो पाते हैं। इसलिए, पूरी और निष्पक्ष हेल्थ जानकारी पाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर परिवारों के सर्वे बहुत ज़रूरी हो गए हैं।

भारत में किए गए कई बड़े पैमाने के स्वास्थ्य सर्वेक्षणों में, 'नेशनल फ़ैमिली हेल्थ सर्वे' (NFHS) एक खास जगह रखता है। यह देश में आबादी की सेहत और परिवार कल्याण से जुड़े राष्ट्रीय स्तर के डेटा का सबसे व्यापक स्रोत है। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की देखरेख में और 'इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फ़ॉर पॉपुलेशन साइंसेज' के समन्वय से 1992 में शुरू किए गए NFHS का मकसद प्रजनन क्षमता, परिवार नियोजन, माँ और बच्चे की सेहत, पोषण, मृत्यु दर और प्रजनन स्वास्थ्य के बारे में भरोसेमंद जानकारी देना था। पिछले तीन दशकों में, इस सर्वेक्षण का दायरा और पैमाना काफी बढ़ा है। इसके अलग-अलग दौर में कई नए इंडिकेटर (पैमाने) शामिल किए गए हैं, जैसे कि गैर-संचारी रोग, महिलाओं का सशक्तिकरण, घरेलू हिंसा, किशोरों की सेहत, साफ़-सफ़ाई, पीने का पानी, स्वास्थ्य बीमा कवरेज, तंबाकू और शराब का सेवन, बायोमेट्रिक माप और सेहत से जुड़े कई सामाजिक कारक। यह बदलाव भारत में बीमारियों के बदलते स्वरूप और कई तरह की स्वास्थ्य जानकारी की बढ़ती ज़रूरत को दिखाता है।

NFHS अंतरराष्ट्रीय स्तर पर माने जाने वाले सर्वेक्षण के तरीकों का पालन करता है, जो कई विकासशील देशों में किए जाने वाले 'डेमोग्राफिक एंड हेल्थ सर्वे' (DHS) जैसे ही हैं। यह वैज्ञानिक रूप से तैयार की गई 'मल्टीस्टेज स्ट्रैटिफाइड सैंपलिंग' तकनीक का इस्तेमाल करता है ताकि यह पक्का किया जा सके कि सर्वेक्षण के नतीजे राष्ट्रीय, राज्य और ज़िला स्तर पर सही तस्वीर पेश करें। स्टैंडर्ड प्रश्नावली, इंटरव्यू लेने वालों की सघन ट्रेनिंग, क्वालिटी कंट्रोल के तरीके और निष्पक्ष एंथ्रोपोमेट्रिक और बायोमार्कर माप सर्वेक्षण के अलग-अलग दौरों के डेटा की विश्वसनीयता और तुलना करने की क्षमता को बढ़ाते हैं। समय के साथ एक जैसा और तुलना करने लायक डेटा मिलने से रिसर्चर और नीति बनाने वाले स्वास्थ्य इंडिकेटर के ट्रेंड की जाँच कर सकते हैं, आबादी में हो रहे बदलावों पर नज़र रख सकते हैं और स्वास्थ्य से जुड़े उपायों के लंबे समय के असर का आकलन कर सकते हैं।

NFHS की एक बड़ी खूबी यह है कि यह उम्र, लिंग, शिक्षा, आर्थिक स्थिति (वेल्थ क्विंटाइल), जाति, धर्म, ग्रामीण-शहरी निवास और भौगोलिक स्थिति जैसे कई पहलुओं पर अलग-अलग डेटा (disaggregated data) इकट्ठा कर सकता है। ऐसी विस्तृत जानकारी सरकारों को उन कमजोर वर्गों की पहचान करने में मदद करती है जिन्हें खास ध्यान की ज़रूरत है, और साथ ही स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच और उनके नतीजों में मौजूद असमानताओं को दूर करने में भी मदद करती है। उदाहरण के लिए, जहाँ राष्ट्रीय औसत से संस्थागत प्रसव (अस्पताल में डिलीवरी) या टीकाकरण कवरेज में सुधार का पता चल सकता है, वहीं ज़िले-स्तर के NFHS डेटा से अक्सर हाशिए पर रहने वाले समुदायों, आदिवासी आबादी और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के बीच काफी असमानताएँ सामने आती हैं। डेटा की इतनी बारीकी नीति-निर्माताओं को आम राष्ट्रीय रणनीतियों पर निर्भर रहने के बजाय, खास

© Copyright @ Authors

ISSN:0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

तौर पर लक्षित उपाय (targeted interventions) तैयार करने में मदद करती है। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) और यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज को हासिल करने के भारत के संकल्प के साथ NFHS का महत्व काफी बढ़ गया है। मातृ मृत्यु दर, बच्चों के पोषण, प्रजनन स्वास्थ्य, लैंगिक समानता, स्वच्छता और स्वास्थ्य सेवाओं के इस्तेमाल से जुड़े कई SDG इंडिकेटर्स को सीधे NFHS डेटा का इस्तेमाल करके मापा जाता है। नतीजतन, यह सर्वे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय विकास लक्ष्यों की दिशा में भारत की प्रगति का आकलन करने के लिए एक महत्वपूर्ण निगरानी तंत्र के रूप में काम करता है। इसके अलावा, NFHS के नतीजे सरकार की प्रमुख योजनाओं जैसे नेशनल हेल्थ मिशन, पोषण अभियान, जननी सुरक्षा योजना, आयुष्मान भारत और विभिन्न टीकाकरण व पोषण कार्यक्रमों के प्रदर्शन का आकलन करने के लिए महत्वपूर्ण सबूत प्रदान करते हैं।

पॉलिसी बनाने के अलावा, NFHS एकेडमिक रिसर्च के लिए एक बहुत ज़रूरी ज़रिया बन गया है। इस सर्वे का बड़ा डेटासेट महामारी विज्ञान, पब्लिक हेल्थ, डेमोग्राफी, इकोनॉमिक्स, न्यूट्रिशन, सोशियोलॉजी, जियोग्राफी और हेल्थ सिस्टम रिसर्च में स्टडीज़ को सपोर्ट करता है। रिसर्चर NFHS डेटा का इस्तेमाल माँ और बच्चे की सेहत के कारणों, हेल्थकेयर के इस्तेमाल के तरीकों, न्यूट्रिशन में असमानता, बीमारी के बोझ, जेंडर के आधार पर असमानता, सेहत के सामाजिक कारणों और सेहत के नतीजों में क्षेत्रीय अंतर की जांच करने के लिए करते हैं। बिना पहचान उजागर किए यूनिट-लेवल डेटा के पब्लिक के लिए उपलब्ध होने से बड़े पैमाने पर साइंटिफिक रिसर्च को बढ़ावा मिला है, जिससे भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सबूतों पर आधारित पब्लिक हेल्थ लिटरेचर में अहम योगदान मिला है।

हाल के सालों में भारत में हो रहे महामारी विज्ञान से जुड़े बदलावों (epidemiological transition) के कारण भी इस सर्वे का महत्व बढ़ गया है। जहाँ एक तरफ संक्रामक बीमारियों और माँ-बच्चे की सेहत से जुड़ी चुनौतियों पर ध्यान देने की ज़रूरत बनी हुई है, वहीं दूसरी तरफ हाइपरटेंशन, डायबिटीज, मोटापा, दिल की बीमारियों और दूसरी गैर-संक्रामक बीमारियों के बढ़ते मामलों ने पब्लिक हेल्थ प्लानिंग के दायरे को बढ़ा दिया है। हाल के NFHS राउंड में बायोमार्कर माप और गैर-संक्रामक बीमारियों के इंडिकेटर्स को शामिल करने से सरकारें सेहत से जुड़े नए खतरों को बेहतर ढंग से समझ पाती हैं और बचाव वाली हेल्थकेयर रणनीतियाँ बना पाती हैं। साथ ही, साफ-सफाई, पीने के पानी, रहने की स्थिति, शिक्षा और महिलाओं के सशक्तिकरण के बारे में जानकारी सेहत के नतीजों पर असर डालने वाले व्यापक सामाजिक कारकों की पूरी समझ देती है।

अपनी कई खूबियों के बावजूद, NFHS सिर्फ़ आंकड़ों का खेल नहीं है, बल्कि सबूतों पर आधारित गवर्नेंस के लिए एक रणनीतिक साधन है। यह सर्वे पूरे देश में भरोसेमंद, तुलना करने लायक और पॉलिसी के लिए ज़रूरी जानकारी देकर हेल्थकेयर पॉलिसी और ज़मीनी हकीकत के बीच की खाई को पाटता है। यह समय के साथ होने वाले बदलावों की निगरानी, पब्लिक हेल्थ से जुड़ी नई चुनौतियों की पहचान, प्रोग्राम की असरदारता का मूल्यांकन और हेल्थकेयर संसाधनों के समान बंटवारे में मदद करता है। जैसे-जैसे भारत का हेल्थकेयर सिस्टम डेमोग्राफिक बदलाव, शहरीकरण, पर्यावरण से जुड़ी चुनौतियों और बीमारियों के बदलते पैटर्न के हिसाब से विकसित हो रहा है, पब्लिक हेल्थ से जुड़े फैसलों में NFHS की भूमिका और भी अहम होने की उम्मीद है।

इस पृष्ठभूमि में, यह पेपर भारत में 'राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण' (NFHS) की ज़रूरत और महत्व की जांच करता है। इसमें सर्वेक्षण के विकास, इसकी कार्यप्रणाली की खूबियों और सबूतों पर आधारित नीति बनाने, कार्यक्रम के मूल्यांकन, स्वास्थ्य समानता के आकलन, शैक्षणिक शोध और टिकाऊ विकास की योजना बनाने में इसके योगदान पर चर्चा की गई है। यह पेपर NFHS से जुड़ी चुनौतियों पर भी प्रकाश डालता है और भारत की सार्वजनिक स्वास्थ्य सूचना प्रणाली को मज़बूत करने में इसकी भविष्य की भूमिका का पता लगाता है।

© Copyright @ Authors

ISSN:0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे (NFHS) का विकास

तालिका 2.1 में भारत में नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे (NFHS) के 1992 में शुरू होने से लेकर 2019-2021 के सबसे हालिया राउंड तक के विकास को दिखाया गया है। टेबल से पता चलता है कि देश की बदलती पब्लिक हेल्थ प्राथमिकताओं के अनुसार, हर नए सर्वे ने अपने विषय और पॉलिसी के महत्व को बढ़ाया है। जहाँ NFHS 1 का मुख्य फोकस नेशनल हेल्थ इंडिकेटर्स (स्वास्थ्य संकेतकों) के लिए बेसलाइन बनाने के मकसद से फर्टिलिटी, परिवार नियोजन और माँ-बच्चे की सेहत पर था, वहीं NFHS 2 में रिप्रोडक्टिव हेल्थ, HIV के बारे में जागरूकता और एनीमिया को शामिल किया गया ताकि रिप्रोडक्टिव हेल्थकेयर प्लानिंग को बेहतर बनाया जा सके। NFHS 3 ने HIV टेस्टिंग, घरेलू हिंसा, महिलाओं के सशक्तिकरण और बायोमार्कर माप को शामिल करके एक बड़ी प्रगति की, जिससे सर्वे का दायरा डेमोग्राफिक आकलन से आगे बढ़ गया। NFHS 4 ने ज़िला स्तर के अनुमान देकर और स्वच्छता, हेल्थ इंश्योरेंस, ब्लड प्रेशर और ब्लड ग्लूकोज़ से जुड़े इंडिकेटर्स को शामिल करके अपनी उपयोगिता को और बढ़ाया, जिससे विकेंद्रीकृत स्वास्थ्य योजना और लक्षित हस्तक्षेप संभव हो सके। इसी आधार पर आगे बढ़ते हुए, NFHS 5 ने सर्वे का विस्तार किया और इसमें गैर-संचारी रोग, वित्तीय समावेशन, इंटरनेट का उपयोग, मासिक धर्म स्वच्छता और अतिरिक्त बायोमार्कर आकलन को शामिल किया, जो भारत के महामारी विज्ञान संबंधी बदलाव और व्यापक पब्लिक हेल्थ निगरानी पर बढ़ते ज़ोर को दर्शाता है। कुल मिलाकर, टेबल 2.1 में दिखाया गया विकास NFHS के उस बदलाव को उजागर करता है जिसमें यह मुख्य रूप से रिप्रोडक्टिव और चाइल्ड हेल्थ से जुड़े सर्वे से बदलकर एक बहुआयामी, राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधि स्वास्थ्य सूचना प्रणाली बन गया है। यह प्रणाली सबूत-आधारित नीति-निर्माण, कार्यक्रम मूल्यांकन, संसाधन आवंटन और राष्ट्रीय स्वास्थ्य लक्ष्यों व सतत विकास लक्ष्यों की दिशा में प्रगति की निगरानी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

तालिका 2.1 राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण का विकास

NFHS Round	**सर्वेक्षण अवधि**	**सर्वेक्षण में स्वास्थ्य पैमानों को संलग्न करना**	**नीति विशेषता**
NFHS 1	1992 to 1993	प्रजनन क्षमता, परिवार नियोजन, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य	राष्ट्रीय स्तर पर स्वास्थ्य के आधारभूत संकेतक स्थापित किए गए।
NFHS 2	1998 to 1999	प्रजनन स्वास्थ्य, HIV जागरूकता, एनीमिया	प्रजनन स्वास्थ्य योजना को मजबूत किया गया
NFHS 3	2005 to 2006	HIV की जाँच, घरेलू हिंसा, महिलाओं का सशक्तिकरण, बायोमार्कर	जेंडर और सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दों की बेहतर समझ
NFHS 4	2015 to 2016	ज़िला-स्तर के अनुमान, साफ़-सफ़ाई, ब्लड प्रेशर, ब्लड ग्लूकोज़, स्वास्थ्य बीमा	विकेंद्रीकृत योजना और ज़िला-स्तरीय निगरानी को सक्षम बनाया।
NFHS 5	2019 to 2021	गैर-संचारी रोग, वित्तीय समावेशन, इंटरनेट का उपयोग, मासिक धर्म स्वच्छता, विस्तारित बायोमार्कर	यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज, SDG मॉनिटरिंग और सबूतों पर आधारित नीति बनाने में सहयोग दिया।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) की ज़रूरत

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) भारत की सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को मज़बूत करने के लिए ज़रूरी है। यह भरोसेमंद, व्यापक और राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधि डेटा देता है, जो सबूतों पर आधारित नीति बनाने, कार्यक्रम की योजना बनाने और स्वास्थ्य सेवा के मूल्यांकन में मदद करता है। भौगोलिक, सामाजिक-आर्थिक और जनसांख्यिकीय विविधता वाले देश में, सिर्फ़ नियमित प्रशासनिक रिकॉर्ड से स्वास्थ्य की स्थिति, स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच और आबादी के स्तर के नतीजों में अंतर को सही ढंग से नहीं समझा जा सकता। NFHS इस कमी को दूर करता है। यह सभी राज्यों और ज़िलों में प्रजनन क्षमता, माँ और बच्चे के स्वास्थ्य, पोषण, प्रजनन स्वास्थ्य, गैर-संचारी रोगों, स्वच्छता, स्वास्थ्य

© Copyright @ Authors

ISSN:0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

बीमा और स्वास्थ्य के विभिन्न सामाजिक कारकों पर व्यवस्थित रूप से मानक जानकारी इकट्ठा करता है। यह सर्वेक्षण सरकारों को क्षेत्रीय असमानताओं की पहचान करने, मुख्य स्वास्थ्य संकेतकों में रुझानों की निगरानी करने, राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का आकलन करने और स्थानीय ज़रूरतों के अनुसार संसाधन आवंटित करने में सक्षम बनाता है। इसके अलावा, उम्र, लिंग, शिक्षा, संपत्ति, जाति, धर्म और निवास स्थान के आधार पर अलग-अलग डेटा की उपलब्धता कमज़ोर आबादी की पहचान करने में मदद करती है और स्वास्थ्य असमानताओं को कम करने के उद्देश्य से लक्षित हस्तक्षेपों के विकास का समर्थन करती है। NFHS राष्ट्रीय स्वास्थ्य उद्देश्यों और सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) जैसी वैश्विक प्रतिबद्धताओं की दिशा में प्रगति की निगरानी के लिए आधारभूत और रुझान डेटा भी प्रदान करता है। साथ ही, इसका वैज्ञानिक रूप से मान्य और सार्वजनिक रूप से सुलभ डेटाबेस शैक्षणिक अनुसंधान, नीति विश्लेषण और कार्यक्रम मूल्यांकन के लिए एक अमूल्य संसाधन के रूप में काम करता है। इस प्रकार, NFHS भारत में उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य जानकारी तैयार करने, सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रशासन को मज़बूत करने और टिकाऊ स्वास्थ्य सेवा योजना का मार्गदर्शन करने के लिए एक अपरिहार्य साधन बन गया है।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) का महत्व

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS) भारत में भरोसेमंद और राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधि स्वास्थ्य और जनसांख्यिकीय डेटा के मुख्य स्रोत के रूप में काम करके सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रशासन को बेहतर बनाने में अहम भूमिका निभाता है। इसका महत्व केवल डेटा इकट्ठा करने तक ही सीमित नहीं है; यह स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में सबूत-आधारित नीति-निर्माण, कार्यक्रम को लागू करने, निगरानी और मूल्यांकन के लिए ठोस आधार प्रदान करता है। यह सर्वेक्षण सरकारों को आबादी की स्वास्थ्य स्थिति का आकलन करने, क्षेत्रीय और सामाजिक-आर्थिक असमानताओं की पहचान करने और कमजोर समूहों की खास जरूरतों को पूरा करने के लिए लक्षित उपाय तैयार करने में मदद करता है। NFHS के नतीजों का इस्तेमाल बड़े राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों - जैसे मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, पोषण, टीकाकरण, परिवार नियोजन, स्वच्छता और गैर-संचारी रोग - के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के साथ-साथ वित्तीय और स्वास्थ्य सेवा संसाधनों की योजना बनाने और उनके समान वितरण में भी किया जाता है। हाल के सर्वेक्षण दौरों से मिले जिला-स्तरीय अनुमानों ने विकेंद्रीकृत स्वास्थ्य योजना को काफी मजबूत किया है, जिससे राज्य और स्थानीय सरकारों को स्थानीय स्वास्थ्य स्थितियों के आधार पर खास रणनीतियां बनाने में मदद मिली है। इसके अलावा, NFHS शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के लिए जनसांख्यिकीय, महामारी विज्ञान और सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण के लिए मानकीकृत डेटा प्रदान करके एक अमूल्य संसाधन के रूप में काम करता है। यह सर्वेक्षण भारत की राष्ट्रीय विकास प्राथमिकताओं और अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं - जिनमें सतत विकास लक्ष्य (SDGs) और यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज (UHC) शामिल हैं - की दिशा में हुई प्रगति की निगरानी में भी मदद करता है। नतीजतन, NFHS भारत की सार्वजनिक स्वास्थ्य सूचना प्रणाली का एक अहम हिस्सा बन गया है, जो सही जानकारी के आधार पर फैसले लेने, स्वास्थ्य सेवा वितरण में सुधार, स्वास्थ्य असमानताओं को कम करने और आबादी के स्वास्थ्य को समग्र रूप से बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

नेशनल फ़ैमिली हेल्थ सर्वे (NFHS) डेटा का इस्तेमाल

नेशनल फ़ैमिली हेल्थ सर्वे (NFHS) से मिले डेटा का इस्तेमाल पब्लिक हेल्थ, पॉलिसी बनाने, एकेडमिक रिसर्च और डेवलपमेंट प्लानिंग जैसे कई क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर किया जाता है। देश का प्रतिनिधित्व करने वाले और वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित डेटासेट के तौर पर, NFHS का इस्तेमाल केंद्र और राज्य सरकारें हेल्थ और सोशल वेलफ़ेयर प्रोग्राम बनाने, लागू करने, मॉनिटर करने और उनका मूल्यांकन करने के लिए करती हैं। यह सर्वे माँ और बच्चे की सेहत, पोषण की स्थिति, फ़र्टिलिटी पैटर्न, परिवार नियोजन के तरीकों, टीकाकरण कवरेज, संक्रामक और गैर-संक्रामक बीमारियों के प्रसार और

© Copyright @ Authors

ISSN:0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

हेल्थकेयर सेवाओं के इस्तेमाल का आकलन करने के लिए ज़रूरी सबूत देता है। इससे सही जानकारी के आधार पर फ़ैसले लेने और संसाधनों का सही बंटवारा करने में मदद मिलती है। रिसर्चर और एकेडमिक संस्थान भी NFHS डेटा का इस्तेमाल हेल्थ से जुड़े नतीजों, सामाजिक-आर्थिक असमानताओं, आबादी में बदलाव, जेंडर के आधार पर असमानताओं और पब्लिक हेल्थ से जुड़े उपायों के असर की जांच करने के लिए करते हैं। इसके लिए वे एडवांस्ड स्टैटिस्टिकल और स्थानिक विश्लेषण तकनीकों का इस्तेमाल करते हैं। अंतरराष्ट्रीय संगठन और डेवलपमेंट एजेंसियां NFHS के नतीजों का इस्तेमाल भारत की ग्लोबल हेल्थ प्रतिबद्धताओं (जैसे सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स (SDGs) और यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज (UHC)) की दिशा में हुई प्रगति को मॉनिटर करने और राष्ट्रीय हेल्थ इंडिकेटर्स की तुलना दूसरे देशों के इंडिकेटर्स से करने के लिए करती हैं। इसके अलावा, सर्वे के हालिया दौर से मिले ज़िला-स्तर के अनुमान विकेंद्रीकृत प्लानिंग में मदद करते हैं। इससे स्थानीय प्रशासन को प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान करने, जगह-खास उपाय तैयार करने और प्रोग्राम की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने में सहायता मिलती है। स्टैंडर्डाइज़्ड, उच्च गुणवत्ता वाले और सबके लिए उपलब्ध डेटा ने महामारी विज्ञान, पोषण, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, भूगोल और पब्लिक पॉलिसी जैसे कई विषयों में रिसर्च को आसान बनाया है। इन सब वजहों से NFHS भारत में सबूत-आधारित गवर्नेंस और सस्टेनेबल डेवलपमेंट के लिए हेल्थ से जुड़ी जानकारी का एक बहुत ही मूल्यवान स्रोत बन गया है।

सबूतों पर आधारित स्वास्थ्य नीति, राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों और सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स (SDGs) में NFHS का योगदान

नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे (NFHS) भारत में सबूतों पर आधारित स्वास्थ्य नीति बनाने और कार्यक्रमों को लागू करने के लिए एक ज़रूरी साधन बन गया है। यह जनसंख्या की विशेषताओं, माँ और बच्चे की सेहत, पोषण, प्रजनन स्वास्थ्य, बीमारियों के प्रसार, स्वास्थ्य सेवाओं के इस्तेमाल और स्वास्थ्य से जुड़े अलग-अलग सामाजिक-आर्थिक कारकों पर भरोसेमंद, व्यापक और राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधि डेटा देता है। यह सर्वे नीति निर्माताओं को स्वास्थ्य से जुड़ी अहम चिंताओं की पहचान करने, खास मकसद वाले उपाय बनाने, स्वास्थ्य सेवाओं के संसाधनों का सही तरीके से बंटवारा करने और समय के साथ स्वास्थ्य संकेतकों में बदलावों पर नज़र रखने में मदद करता है। इसकी एक जैसी कार्यप्रणाली सर्वे के अलग-अलग दौरों के बीच तुलना करने की सुविधा देती है, जिससे माँ और बच्चे की सेहत, पोषण, टीकाकरण, परिवार नियोजन, साफ़-सफ़ाई और संक्रामक व गैर-संक्रामक बीमारियों की रोकथाम और नियंत्रण से जुड़े राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों का मूल्यांकन आसान हो जाता है। ज़िला स्तर के अनुमानों की उपलब्धता विकेंद्रीकृत स्वास्थ्य योजना को और मज़बूत बनाती है, जिससे राज्य सरकारें और स्थानीय प्रशासन क्षेत्रीय असमानताओं की पहचान कर सकते हैं, कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का आकलन कर सकते हैं और स्थिति के हिसाब से सुधारात्मक उपाय लागू कर सकते हैं। राष्ट्रीय कार्यक्रमों के मूल्यांकन के अलावा, NFHS सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स (SDGs) के प्रति भारत की प्रतिबद्धताओं के लिए एक महत्वपूर्ण निगरानी ढांचा भी है, खासकर माँ और बच्चे की सेहत, पोषण, लैंगिक समानता, साफ़-सफ़ाई, साफ़ पीने का पानी और स्वास्थ्य असमानताओं को कम करने से जुड़े लक्ष्यों के लिए। यह सर्वे बेसलाइन और ट्रेंड डेटा देता है, जिससे सरकारें, शोधकर्ता और अंतरराष्ट्रीय संगठन इन वैश्विक विकास लक्ष्यों की दिशा में हुई प्रगति का आकलन कर सकते हैं और साथ ही स्वास्थ्य संकेतकों की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तुलना भी कर सकते हैं। काफी खूबियों के बावजूद, NFHS की कुछ सीमाएं भी हैं। इनमें शामिल हैं: इसका लगातार न होकर समय-समय पर होने वाला स्वरूप; कुछ जानकारियों के लिए जवाब देने वाले की याददाश्त पर निर्भरता; क्रॉस-सेक्शनल डिज़ाइन के कारण कारण-और-प्रभाव का संबंध न बता पाना; और डेटा इकट्ठा करने और उसे प्रकाशित करने के बीच लगने वाला समय। फिर भी, पब्लिक हेल्थ प्लानिंग और गवर्नेंस में इसके बड़े योगदान के सामने ये सीमाएं कम महत्वपूर्ण हैं। भविष्य में NFHS का महत्व और बढ़ने की उम्मीद है, क्योंकि आने वाले सर्वे

© Copyright @ Authors

ISSN:0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

राउंड में स्वास्थ्य से जुड़ी नई प्राथमिकताओं को शामिल किया जा सकता है। इनमें मानसिक स्वास्थ्य, बुजुर्गों की देखभाल, पर्यावरण और जलवायु से जुड़े स्वास्थ्य जोखिम, डिजिटल हेल्थकेयर तक पहुंच, हेल्थकेयर की गुणवत्ता, स्वास्थ्य पर खर्च और एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंस जैसे मुद्दे शामिल हैं। एडवांस्ड डिजिटल टेक्नोलॉजी, जियोस्पेशियल इंफॉर्मेशन सिस्टम, इलेक्ट्रॉनिक हेल्थ रिकॉर्ड और रियल-टाइम डेटा कलेक्शन के तरीकों को शामिल करने से NFHS की सटीकता, समय पर जानकारी मिलने की क्षमता और पॉलिसी के लिए इसकी उपयोगिता और बढ़ सकती है। इससे भारत के सबसे व्यापक पब्लिक हेल्थ सर्विलांस और सबूत जुटाने वाले सिस्टम के तौर पर इसकी भूमिका और मजबूत होगी।

निष्कर्ष

नेशनल फ़ैमिली हेल्थ सर्वे (NFHS) ने आबादी की सेहत और डेमोग्राफ़िक विशेषताओं पर वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित, राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधि और नीति के लिए ज़रूरी डेटा उपलब्ध कराकर भारत के पब्लिक हेल्थ इन्फॉर्मेशन सिस्टम में एक अहम भूमिका निभाई है। इसके योगदान सिर्फ़ हेल्थ से जुड़े आंकड़ों तक ही सीमित नहीं हैं; यह सबूतों पर आधारित नीति-निर्माण, प्रोग्राम की निगरानी, संसाधनों के बंटवारे, एकेडमिक रिसर्च और राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय विकास लक्ष्यों के मूल्यांकन में भी मदद करता है। सर्वे के अलग-अलग दौरों के ज़रिए, NFHS ने स्वास्थ्य से जुड़ी नई प्राथमिकताओं को शामिल करने के लिए लगातार अपना दायरा बढ़ाया है। इससे यह स्वास्थ्य असमानताओं को समझने, पब्लिक हेल्थ से जुड़े उपायों का मूल्यांकन करने और विकेंद्रीकृत हेल्थकेयर प्लानिंग को मज़बूत करने के लिए एक ज़रूरी संसाधन बन गया है। जैसे-जैसे भारत का हेल्थकेयर सिस्टम विकसित हो रहा है, सही जानकारी के आधार पर फ़ैसले लेने और समान, कुशल व टिकाऊ स्वास्थ्य विकास को बढ़ावा देने में NFHS की अहमियत और भी बढ़ने की उम्मीद है।

संदर्भ

1. International Institute for Population Sciences and Ministry of Health and Family Welfare. National Family Health Survey (NFHS 5), 2019 to 2021.
2. International Institute for Population Sciences. National Family Health Survey (NFHS 4), 2015 to 2016.
3. Ministry of Health and Family Welfare. National Health Policy 2017.
4. World Health Organization. World Health Statistics.
5. United Nations. Transforming Our World: The 2030 Agenda for Sustainable Development.
6. NITI Aayog. SDG India Index Reports.
7. World Bank. Monitoring Health Outcomes Using Household Surveys.

© Copyright @ Authors